© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology

अजन्ता की चित्रकला

मंजू यादव
शोध छात्रा, दृश्य कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सारांश – अजन्ता बौद्ध कला केन्द्र के रूप में विश्व विख्यात है। यह गुफायें अपनी जीवंत चित्रकला के लिये प्रसिद्ध हैं। इन गुफा चित्रों के विषय महात्मा बुद्ध के जन्म–जन्मान्तर की कथायें हैं, जो जातक कथा के नाम से प्रसिद्ध है। अजिष्ठा नामक गाँव में स्थित होने के कारण इसका नाम अजन्ता पड़ा। वर्तमान में यह गुफा औरंगाबाद जिले (महाराष्ट्र) में बघोरा नदी की मनोरम घाटी में अर्द्ध चन्द्राकार रूप में स्थित है। यहाँ के शान्त और मनोरम वातावरण को देखकर बौद्ध भिक्षुओं ने इसे कला साधना के लिये उपयुक्त समझा होगा। यहाँ हमें चित्रकला, मूर्तिकला तथा वास्तुकला का अनोखा संगम दिखायी देता है। भारतीय कलाकारों और दर्शको को यहाँ के चित्र हमेशा ही आकर्षित करते रहें हैं। समय–समय पर अनेक कलाकारों ने यहाँ के चित्रों की अनुकृतियाँ भी बनायी। इसकी अद्वितीय चित्रकारी, वास्तु एवं मूर्तिशिल्प के कारण सन् 1983 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर में शामिल किया।

मुख्य शब्द – अजन्ता की कला, बौद्ध कला।

बोधिसत्व पद्मपाणि, सौजन्य–विकिपीडिया

प्रस्तावना – बौद्ध कला का विस्तृत ज्ञान एवं प्रमाण हमें अजन्ता से मिलता है। यहाँ चित्रों का निर्माण गुफा की दीवारों पर किया गया है। अजन्ता में कुल तीस गुफायें हैं। जिनका निर्माण पाँच राजवंशों– आन्ध्र–सातवाहन, चालुक्य, वाकाटक, कुषाण एवं गुप्त काल में हुआ है। अजन्ता के सबसे प्राचीन चित्र गुफा सं॰ 9 व 10 के हैं। जो दक्षिण भारत के आन्ध्र राजाओं के संरक्षण में चित्रित किये गये थे। यहाँ कई गुफाओं में ऐसे चित्र प्राप्त हुए हैं, जिनके ऊपर दोबारा चित्र बनाये गये हैं।

यहाँ के चित्रों को वाचस्पति गैरोला ने ''भारतीय चित्रकला'' नामक अपनी पुस्तक में तीन भागों में बाँटा है। प्रथम श्रेणी में ''अलंकारिक'' चित्रों को रखा है। जिसमें मुख्य रूप से आलेखन बनाये गये हैं। इनमें फूल–पत्तियाँ, कलियाँ, कमल दल, वृक्ष, पशु–पक्षी, किन्नर, राक्षस, नाग, गरूण, गन्धर्व, अप्सरायें आदि द्वारा आलेखनों को संयोजित किया गया है।

द्वितीय श्रेणी ''रूप भैदिक'' है। जिसमें भगवान बुद्ध के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप को चित्रित किया गया है। इसमें बुद्ध के जीवन के सभी पहलुओं को, जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन चित्र को उभारा गया है। जैसे– बुद्ध का जन्म, विवाह, गृह–त्याग इत्यादि घटनायें।

तृतीय श्रेणी में ''जातक कथाओं को रखा है। इसमें जातको से अनुबद्ध अनेक प्राचीन कथाओं का चित्रण हुआ है। जो भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का कथा के रूप में प्रस्तुतीकरण करते हैं। जैसे– ब्राह्मण जातक, शिवि जातक, छदन्त जातक, वेस्सान्तर जातक, हस्ति जातक आदि। उपरोक्त चित्रों में खनिज रंगों द्वारा चित्रण हुआ है। जिसमें सफेद, लाल, पीला, भूरा, नीला और हरे रंगों का प्रमुखता से प्रयोग होता हुआ दिखायी देता है।

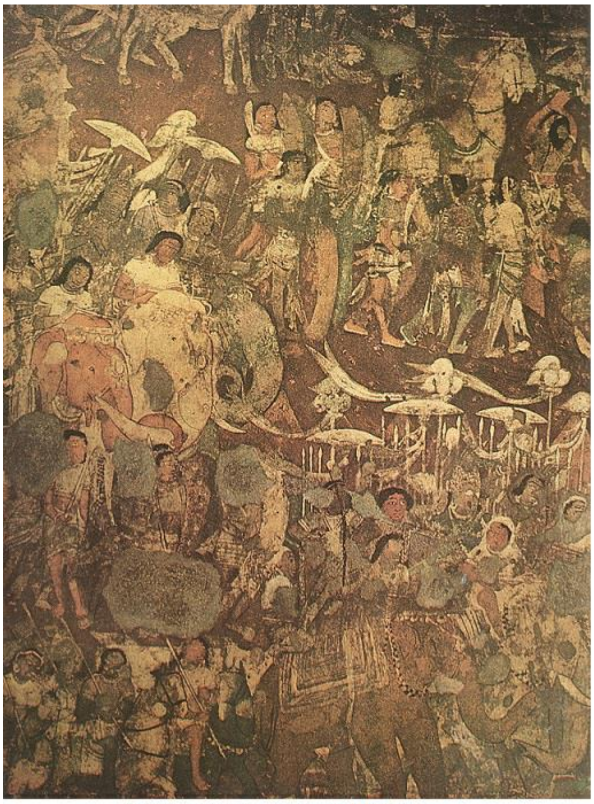

सिंहलावदान, गुफा सं. 17, सौजन्य–विकिपीडिया

भित्तिचित्र

अजन्ता की पहली गुफा में प्रवेश करते ही बाई ओर गुफा की दीवार पर ''शिवि जातक'' की कथा का चित्रण मिलता है। इस जातक से दान पारमिता की पूर्ति की अभिप्रेरणा प्राप्त होती है। इस जातक कथा को अजन्ता के चित्रकारों ने बहुत ही जीवंतता के साथ चित्रित किया है। चित्र के एक दृश्य में राजा शिवि की गोद में बैठे कबूतर को चित्रित किया गया है। दूसरे दृश्य में राजा शिवि तराजू के पास खड़े हैं तथा चित्र के अन्तिम दृश्य में राजा साधु–सन्यासियों से घिरे चित्रित किये गये हैं। जो राजा की दयालुता के लिये उन्हें श्रद्धा भाव से उपहार आदि दे रहे हैं।

इसकी बाई भित्ति पर ''नागराज की सभा'' का दृश्य है। इस दृश्य में दरबार की चहल–पहल, राजसी ऐश्वर्य और वहाँ पर हो रहे नृत्य को चित्रकारों ने जिस सजीवता से दर्शाया है, वही इस चित्र को विशेष बना देता है। इस चित्र में राज दम्पत्ति के पीछे चँवर धारिणी की आकृति

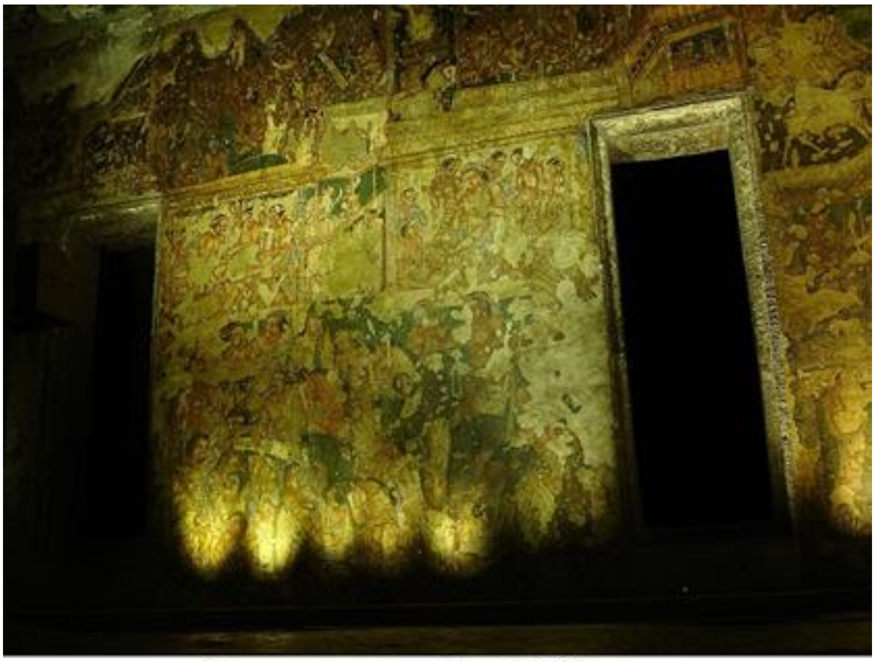

विदुर जातक, गुफा सं. 2, सौजन्य–विकिपीटिया

कोमल मुद्रा के कारण दर्शनीय है। इन आकृतियों के अतिरिक्त यहाँ फल–फूल, दासी की आकृति, स्त्री–पुरूषों की आकृति के मध्य नृत्य की मुद्रा में केन्द्रीय आकृति महत्वपूर्ण है।

''नागराज की सभा'' के उपरान्त ''शंखपाल जातक'' की कथा आती है, जो अजन्ता के सर्वोत्कृष्ट चित्रों में से एक है। चित्र के एक दृश्य में चौकोर शिला के ऊपर मगध के राजा और नागराज का वार्तालाप चित्रित है। यहाँ शंखपाल और उनके पीछे राज महिलाओं की मुद्रा बड़ी ही सुष्ठ चित्रित की गयी है। इसमें सामने बैठी एक स्त्री का चित्र है, जो दर्शको की ओर अपनी पीठ किये है। अपनी मुद्रा के कारण यह बहुत प्रसिद्ध है। कला की दृष्टि से यह चित्र बहुत ही मनमोहक तथा दर्शनीय है।

इस चित्र के उपरान्त दायी ओर ''महाजनक जातक'' की कथा का चित्रण किया गया है। जिसमें अजन्ता के चित्रकारों के उत्कृष्ट कौशल का परिचय मिलता है। इस कथा में चित्रों की एक लम्बी परम्परा का चित्रण दिखायी देता है। हालांकि कथा का क्रम एक प्रवाह में न होकर आगे–पीछे है। चित्र में दाई ओर महाजनक के जहाज का दुर्घटनाग्रस्त होने का चित्रण है तथा बाई ओर सीवली (पत्नी) द्वारा भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर आकर्षित करने के प्रयत्नों का चित्रण किया गया है। जिसमें एक राज पुरूष सुन्दर स्त्री के साथ बैठा हुआ है। एक नर्तकी भावपूर्ण मुद्रा में नृत्य कर रही है। जबकि महाजनक इन सबसे दूर होने की इच्छा की चाह में शांत भाव–भंगिमा में अंकित किये गये हैं। चित्र के अन्तिम भाग में राजा घोड़े पर सवार होकर बाहर जाते हुये चित्रित किये गये हैं और उनके पीछे सीवली उनका अनुसरण करते हुए दिखायी गयी हैं।

पहली गुफा की बाई भित्ति पर विश्व प्रसिद्ध ''बोधिसत्व पद्मपाणि'' का चित्रण है। इस चित्र में कलाकार द्वारा करूणा भाव को बड़े मार्मिक ढ़ग से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही विशिष्टता दर्शाने के लिये कलाकारों ने बोधिसत्व की आकृति को अन्य आकृतियों से बड़ा बनाया है। उनके तीन शिखरों वाले भारी मुकुट, गले में मोतियों की माला की चमक दिखाने में अपने पर्याप्त कौशल का परिचय दिया है।

यहीं पर एक दृश्य (चित्र), ईरानी दैत्यों के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें हमें एक राजसभा में ईरानी वस्त्र धारण किये कुछ आकृतियाँ दिखती हैं। इस चित्र को कुछ विद्वानों ने ''पुलकेशियन के दरबार में ईरानी दूत'' कह कर सम्बोधित किया है। अन्य गुफाओं की भाँति इस गुफा के पाटन पर अनेक सुन्दर अलंकरण पशु–पक्षियों के साथ संयोजित किये गये हैं, जिनको संरक्षित करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

अजन्ता की दूसरी गुफा की बाई भित्ति पर बुद्ध के जन्म से सम्बान्धित चित्रण किया गया है। इसमें सर्वप्रथम राज महल का दृश्य दिखायी देता है। जहाँ सम्भवतः माया देवी सो रही हैं तथा उनके पास दो–तीन दासियाँ बैठी हैं। यहीं पर चित्रित दूसरे दृश्य में हम ''तुषित स्वर्ग में बोधिसत्व'' को पाते हैं, सिंहासन के दोनों ओर मकर की आकृति बनी हुई है। यहीं पर एक अन्य दृश्य में महामाया और शुद्धोधन का चित्रण है, जो सम्भवतः स्वप्न की चर्चा कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त चित्र में राज दम्पत्ति और दासियाँ भी चित्रित की गयी हैं, जिनकी भाव–भंगिमायें बहुत ही सुन्दर बनायी गई हैं। इसी दृश्य में एक रमणी की आकृति खम्भे का सहारा लिये खड़ी है, जैसे वह कोई गणना कर रही हो। यह आकृति

गुफा सं॰ दो के सर्वोत्कृष्ट आकृतियों में से एक है। इसके अगले दृश्य में शाल वृक्ष की डाल पकड़े माया देवी को चित्रित किया गया है।

इस कथा के अनुसार बोद्धिसत्व ने एक बाह्मण के घर जन्म लिया। शिक्षा ग्रहण कर एवं बौद्ध धर्म के अनुयायी बनने के पश्चात् हिमालय पर रहने लगे। इसके कुछ समय बाद वह हिमालय से काशी रहने के लिए आए, जहाँ एक बाग में उनके रहने की व्यवस्था की गयी। एक दिन वहाँ के राजा उपवन क्रीडा के लिए अपनी रानियों व नर्तकियों के साथ गये। वहां अमोद–प्रमोद के पश्चात् राजा को नीद आ गयी। राजा को सोता हुआ छोड़कर रानियां व नर्तकियां सन्यासी क्षान्तिवादी का धार्मिक प्रवचन सुनने चली जाती हैं। इधर जब राजा की नीद खुलती है तो, स्वयं को अकेला पाकर बहुत क्रोधित होता है, और रानियों तथा नर्तकियों को मृत्युदण्ड की सजा सुनाता है। हालाँकि यह चित्र काफी मात्रा में क्षतिग्रस्त हो गया है, किन्तु इसके चित्रण में मार्मिकता का आभास दिखाई दे जाता है। जिसमें राजा तलवार लेकर मंच पर बैठा है, उसके दांए हाथ में तलवार है। स्त्रियों का एक समूह उसे घेरकर बैठा है, जहाँ राजा के सामने एक स्त्री उसके पैरों में झुकी क्षमा–याचना करते हुए चित्रित की गयी है। इसके अतिरिक्त यहाँ हंस जातक की कथा का भी अंकन हुआ है।

नौवीं व दसवीं गुफा के वास्तुशिल्प के अनुसार यह गुफा सबसे प्राचीन है। दसवीं गुफा में स्थित एक शिलालेख में विद्वानों ने इसे दूसरी शती ई॰ का माना है। नौवीं व दसवीं गुफा में भी काफी हद तक समानता देखने को मिलती

अजन्ता में चित्रित आलेखन, सौजन्य– गूगल

है। यहाँ तक की इनकी वास्तु व शैलियाँ भी एक समान प्रतीत होती है। जिससे ये दानों समकालीन मानी जाती हैं।

दसवीं गुफा में ‘‘छदन्त जातक’’ का चित्र प्रसिद्ध है। यहाँ वन के कई सुन्दर दृश्यों का चित्रण है। जिसके बीच में बोद्धिसत्व कमल वन में गजराज छदन्त के रूप में रेखांकित हैं। इस जातक कथा को अजन्ता के चित्रकारों ने बहुत

ही मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। चित्र के एक भाग में हाथियों को क्रीडारत दिखाया गया है। इन हाथियों में एक हाथी भव्य और विशालकाय है। चित्र के दूसरे भाग में लेटी हुई रानी के साथ राजा और व्याघ्र का चित्रण किया गया है। इसके अगले भाग में सोनुत्तर (शिकारी) द्वारा छदन्त के दांत को काटते हुए फिर कांवर में छः दांत को लाते हुए दिखाया गया है। इसके पश्चात् राजमहल में रानी के मूर्छित होने का दृश्य बना हुआ है। यहाँ के चित्रों की एक विशेषता यह है कि पृष्ठभूमि में वृक्षों का अंकन यथार्थवादी शैली में हुआ है। इसी गुफा में ''श्याम जातक'' कथा का भी चित्रण है। दसवीं गुफा के खम्भों पर भगवान बुद्ध की कई आकृतियाँ खड़ी मुद्रा में बनायी गयी हैं। जिसमें उनकी आखें सहज ही करूणा भाव का आभास कराती हैं।

सोलहवीं गुफा सभी गुफाओं के मध्य में स्थित है। इस विहार गुफा में सर्वाधिक चित्र हैं। इन चित्रों में गुप्त काल के विशिष्ट चित्र प्राप्त होते हैं, किन्तु खेद इस बात का है कि इस गुफा के कई सुप्रसिद्ध चित्र नष्ट हो गये हैं। इनमें ''बुद्ध का तुषित स्वर्ग से अवतरण'', ''सुतसोम जातक'', ''हस्ति जातक'' है, जो गुप्त काल के उच्च कोटि के चित्रों में से एक थे। इस गुफा के अन्य चित्रों में ''माया देवी का स्वप्न'', ''वृद्ध व्यक्ति'', ''असित ऋषि की भविष्यवाणी'', '' नन्द की दीक्षा'', ''बुद्ध एवं अजातशत्रु की भेट'', ''मरणासन्न राजकुमारी'', ''हस्ति जातक'', ''महाउम्मग जातक'' जैसे प्रसिद्ध चित्र हैं। इस गुफा का सर्वाधिक प्रसिद्ध चित्र ''मरणासन्न राजकुमारी'' या ''मरती राजकुमारी'' नाम से

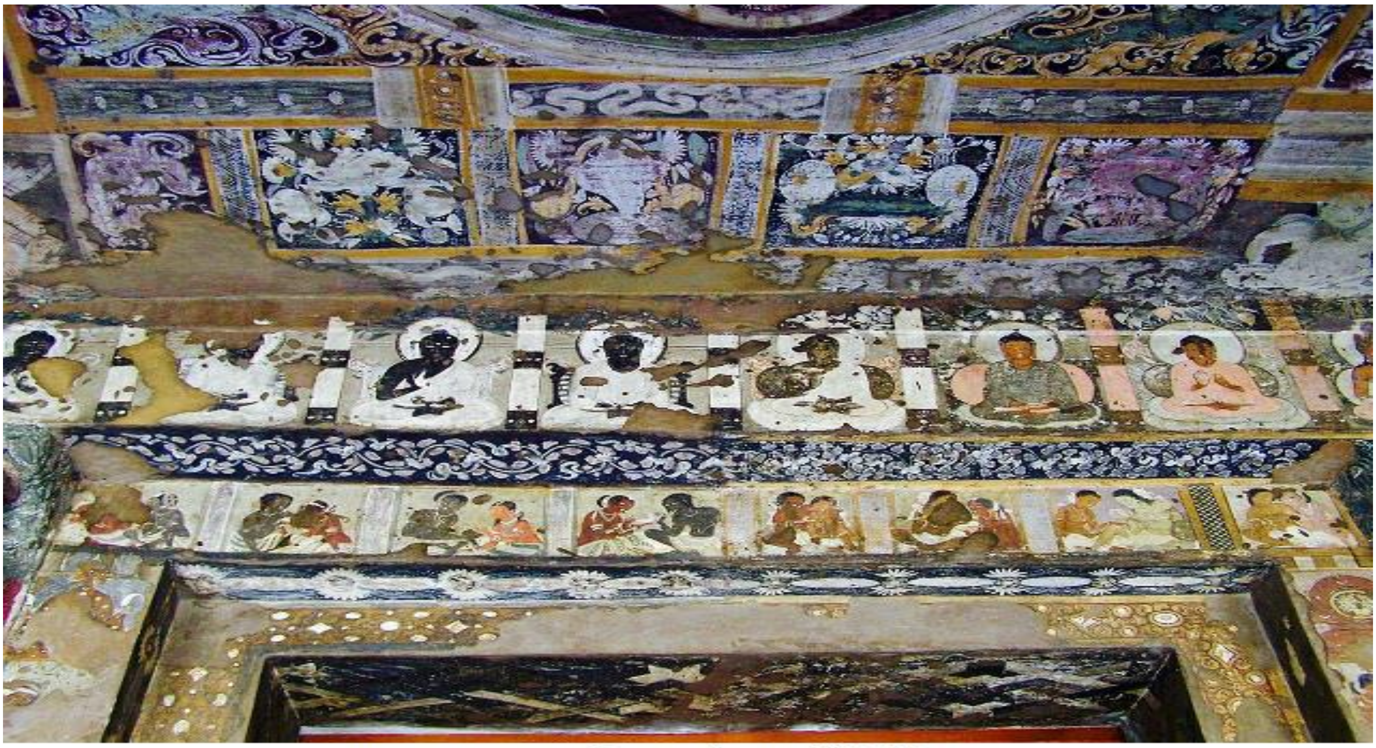

आठ बुद्धा, गुफा सं. 17, सौजन्य–विकिपीडिया

विख्यात है। जिसमें एक कुलीन महिला ऊँचे आसन से सिर लटकायें हुयें चित्रित की गयी है। उसके पीछे एक दासी उसे सहारा देकर ऊपर उठाये है, जबकि दूसरी दासी उसका नाड़ी परीक्षण कर रही है। एक अन्य दासी पंखा चला रही है। भूमि पर अन्य लोग चितिंत मुद्रा में बैठे हैं। प्रत्येक के मुख पर दुख एवं निराशा का भाव है। इस चित्र में राजकुमारी

के अधखुले नेत्र व शिथिल अंग सहज ही करूणा का भाव उत्पन्न करते हैं। यह राजकुमारी कोई और नही, बुद्ध के भाई नन्द की पत्नी है। जिसकी ऐसी दशा नन्द के भिक्षु बन जाने के समाचार से हुई है। इसी दृश्य के अन्य भाग में केले के वृक्ष का अंकन व उसकी कोमलता को कलाकार ने बड़े ही कुशलतापूर्वक दर्शाया है। यहीं पर बुद्ध के उपदेश देने का दृश्य भी बना है, जिसमें बुद्ध की शांत मुद्रा व श्रोताओं की आकृतियाँ दर्शनीय हैं।

सत्रहवीं गुफा के चित्र अजन्ता के सर्वश्रेष्ठ आलेखनों में से हैं। जो अब लगभग नष्ट हो चुके हैं। यहाँ एक स्थान पर ''दिव्य गायको का समूह'' नामक चित्र संयोगवश बचा रह गया है। जिसमें एक ओर गायको के समूह के उड़ने का भाव प्रदर्शित है, तो दूसरी ओर गान में लीन हुई तन्मय गन्धर्व की मुख–मुद्रा। इसके अतिरिक्त सत्रहवीं गुफा के द्वार पर प्रेमाशक्त कई दम्पत्तियों के चित्र हैं। इस गुफा के भीतर अनेक गुप्त कालीन चित्र बने हैं। जिनके चेहरे को कलाकारों ने भिन्न बनाने में विशेष दक्षता दिखायी हैं। इसी गुफा में ''छदन्त जातक'' और ''महाकपि जातक'' की कथा का दृश्य है। जिसमें वन के सुन्दर दृश्य तथा भीड़–भाड़ दिखायी देता हैं। इसी प्रकार का चित्र ''हंस जातक'' कथा का है। इसके अलावा विश्व विख्यात चित्र ''माता–पुत्र'' भी इसी गुफा की भित्ति पर चित्रित हैं।

सत्रहवीं गुफा में अनेक जातक कथायें चित्रित हैं। जो बुद्ध के जीवन का दर्शन कराती हैं। जैसे– श्याम जातक, मृग जातक, कपि जातक, मत्स्य जातक, सुतसोम जातक, हम्सा जातक इत्यादि। इसके साथ ही बुद्ध के जीवन के अनेक दृश्य जैसे– श्रावस्ती का चमत्कार, तुषित स्वर्ग में प्रवचन, माता–पुत्र जिसको चित्रित करने में चित्रकार ने अद्भुत कुशलता का परिचय दिया है। अजन्ता के कलाकारों ने गौतम बुद्ध के जन्म–जन्मान्तर, जातक कथाओं, अवदान पर आधारित चित्रों के निर्माण में जिस कुशलता का परिचय दिया हैं, उनके लिये यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अजन्ता को ख्याति दिलाने में उनका अत्यधिक सहयोग रहा।

हम्सा जातक, सौजन्य–विकिपीडिया

संदर्भ–

1. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रताप (वैश्य), डॉ॰ रीता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 5वाँ संस्करण 2009, पृष्ठ सं॰ 57–86।
2. अजन्ता की गुफाएं (स्थापत्य, शिल्प एवं चित्र), शोध प्रबन्ध– यादव, शिव प्रकाश।
3. समकालीन कला, अजन्ता के भित्तिचित्र, कृष्णदास, राय, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 38–39।
4. aAjanta, Okada, Amina, Nou, Jean- Louis, Brijbasi Printers Private LTD.
5. अजन्ता के चित्र एव ंरंग संयोजन, दुबे, प्रो0 श्रद्धा, शोध पत्र, इण्टर नेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, दिसम्बर–2014